ओमशांति प्रातःक्लास 15.1.67

रिकार्ड–मरना तेरी गली में.....सिवाय तुम ब्राह्मण बच्चों के .....गीत का अर्थ कोई समझ नहीं सकते।भल गीत बनाया है जैसे वेदशास्त्र आदि भी बनाये हैं ;परंतु जो कुछ पढ़ते हैं उसका अर्थ कोई भी समझ नहीं सकते हैं।इसलिए बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा मुख द्वारा वेदों–शास्त्रों का सार समझाता हूँ।वैसे ही इन गीतों का अर्थ भी कोई समझ नही सकते।भल गीत बनाया है जैसे वेदशास्त्र आदि भी बनाये हैं ;परंतु जो कुछ पढ़ते हैं उसका अर्थ कोई भी समझ नहीं सकते हैं।इसलिए बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा मुख द्वारा वेदों–शास्त्रों का सार समझाता हूँ।वैसे ही इन गीतों का अर्थ भी कोई समझ नहीं सकते हैं।आत्मा जब शरीर से न्यारी हो जाती है तो दुनियां से सारा सम्बंध टूट जाता है।गीत भी कहते हैं अपने को आत्मा समझो।अशरीरी बन बाप को याद करते हैं तो यह दुनियां ही सारी खतम हो जाती है।यह शरीर इस पृथ्वी पर खड़ा है।आत्मा इस शरीर से निकल जाती है तो उस समय उसके लिए कोई सृष्टि है नहीं।आत्मा नंगी बन जाती है।फिर जब शरीर में आती है तो सृष्टि पर है।इतना जरूर है आत्मायें जो महत्तत्व में रहती हैं ,यहां आती हैं शरीर में पार्ट बजाने।फिर शरीर छोड़ती हैं तो एक शरीर छोड़ दूसरे में जाकर प्रवेश करती हैं।वापस महत्तत्व में नहीं जाती हैं।उड़कर दूसरे शरीर में जाती हैं।यहां इस आकाश तत्व में ही उनको पार्ट बजाना है।मूलवतन में नहीं जाना है।जब शरीर छोड़ते हैं तो ना यह कर्मबंधन, ना ही वो कर्म बंधन रहता है।शरीर से ही अलग हो जाती है ना।फिर वो दूसरे शरीर में गई तो फिर कर्मबंधन शुरू होता है।जब तक शरीर में नहीं है तो वो नंगी है।यह बातें तुम्हारे सिवाय और कोई मनुष्य नहीं जानते हैं।बाप ने समझाया है सब मूर्ख और बेसमझ बन गये हैं ;परंतु ऐसे कोई समझते थोड़े ही हैं कि हम मूर्खबुद्धि हैं।अपने को कितना अक्लमंद समझते हैं।पीस प्राइज़ देते रहते हैं।यह भी तुम ब्राह्मणकुलभूषण अच्छी रीत समझा सकते हो।वो तो जानते ही नहीं हैं कि पीस किसको कहा जाता है।कोई2 तो महात्माओं पास जाते हैं कि मन को शांति कैसे हो?यह फिर कहते हैं वर्ल्ड में शांति कैसे हो?ऐसे नहीं कहेंगे कि निराकारी दुनियां में शांति कैसे हो।वो तो है ही शांतिधाम।हम आत्मायें शांतिधाम निर्वाणधाम में रहती हैं ;परंतु यह जो मन की शान्ति मांगते हैं वो जानते नहीं हैं कि शांति कैसे मिलेगी।शांतिधाम तो अपना घर है।यहां शांति कैसे मिल सकती है?हां, सतयुग मे सुख, शांति, सम्पत्ति सब है।जिसकी स्थापना बाप करते हैं।यह भी अभी तुम बच्चे समझते हो सुख, शांति, सम्पत्ति भारत में ही है।वो वर्सा था बाप का और यह दुःख, अशांति, कंगालपन यह वर्सा है रावण का।यह सब बातें बेहद का बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं।तुम समझते हो हम आत्माओं को बाप कहते हैं।और कोई भी ऐसा समझ नहीं सकते कि हम आत्माओं को परमात्मा समझाते हैं।वो बाप परमधाम में रहने वाले नालेजफुल हैं।जो सुखधाम–शांतिधाम का हमको वर्सा देते हैं।वो हम आत्माओं को समझा रहे हैं।यह तुम जानते हो कि नालेज होती है आत्मा को।उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है।वो ज्ञान का सागर इस शरीर द्वारा वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी समझाते हैं।वर्ल्ड की आयु तो होनी चाहिए ना।वर्ल्ड तो है ही है।सिर्फ नया और पुराना होता है।नई दुनियां और पुरानी दुनियां कहा जाता है।यह भी दुनियां को पता नहीं है कि न्यू वर्ल्ड ,ओल्ड वर्ल्ड किसको कहा जाता है।तुम बच्चे जानते हो न्यू वर्ल्ड से ओल्ड वल्ड होने में कितना समय लगता है।वो तो कुछ नहीं समझते हैं।कोई क्या कहते हैं ,कोई क्या कहते रहते हैं।नई दुनियां सतयुग को, पुरानी दुनियां कलियुग को कहा जाता है।कलियुग के बाद सतयुग जरूर आना ही है।इसलिए कलियुग और सतयुग के संगम पर बाप को आना पड़ता है।यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनियां की स्थापना ,शंकर द्वारा पुरानी दुनियां का विनाश कराते हैं।त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है।ब्रह्मा द्वारा स्थापना,विष्णु द्वारा पालना.....यह तो कामन है ;परंतु तुम बच्चे भी यह बातें भूल जाते हो।नहीं तो तुमको खुशी बहुत रहे।निरंतर याद रहनी चाहिए ना।बाबा हमको अब नई दुनियां के लायक बना रहे हैं।भारतवासी ही लायक बनते हैं।और कोई नहीं।हां, जो और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं वो आ सकते हैं।फिर इसमें कन्वर्ट हो जावेंगे।जैसे उसमें हुये हैं।यह सारी नालेज तुम्हारी बुद्धि में है।मनुष्यों को समझाना है।यह पुरानी दुनियां अब बदल रही है।महाभारत लड़ाई भी जरूर लगेगी ही।इस समय ही बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं जो

राजयोग सीखते हैं वो नई दुनियां में चले जाते हैं।प्रदर्शनी में भी यह समझाओ।इन ल.ना. का राज्य नई दुनियां में था।सतयुग नई दुनियां को कहा जाता है।उस समय रामराज्य भी नहीं था।सतयुग के बाद त्रेता होता है।वन फोर्थ दुनियां का पास हो जाता है।आधा कल्प दिन और आधा कल्प रात भी गाया हुआ है ना।यह सब बातें बच्चों की बुद्धि में रहनी चाहिए।नहीं तो यथार्थ रीत समझा नहीं सको।उंच ते उंच है भगवान।फिर है ब्रह्मा,विष्णु ,शंकर।फिर आओ यहां–मुख्य है जगतअम्बा जगतपिता।बाप आते ही हैं यहां ब्रह्मा के तन में।प्रजापिता ब्रह्मा तो यहां है ना।ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्मवतन में तो नहीं होगी ना।वहां ही होती है।यह जो पतित है सो फिर पावन (व्यक्त) सो फिर (अव्यक्त) बन जाते हैं।यह राजयोग सीखकर फिर विष्णु का दो रूप बनते हैं।यह समझाना तो चाहिए ना।वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी समझनी तो चाहिए ना।मनुष्य ही समझेंगे।वर्ल्ड का मालिक ही वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी समझा सकते हैं।वो नालेजफुल पुनर्जन्म रहित हैं।यह बातें किसी की भी बुद्धि में नहीं हैं।...वो स्वर्ग में आने वाले ही नहीं हैं।सुनते ऐसे हैं जैसे बंदर, समझा जाता है कि इनकी बुद्धि में कुछ भी बैठता नहीं है।परखने की भी बुद्धि चाहिए ना।कुछ बुद्धि में बैठता है या बांवला.....है।नब्ज देखनी होती है।एक अजम(ल) खां नामीग्रामी वैद्य होकर गया है।कहते हैं कि उसको देखने से ही बीमारी का पता पड़ जाता था।अब तुम बच्चों को भी समझना चाहिए कि यह लायक है वा नालायक है।इतनी अच्छी बुद्धि भी उनकी होगी जो कि पूरा योगयुक्त होंगे।जिसकी बाप से प्रीतबुद्धि होगी।सबकी तो नहीं है ना।एक–दो के नाम–रूप में लटक पड़ते हैं।बाप कहते हैं प्रीत तो मेरे साथ लगाओ ना।माया ऐसी है जो प्रीत रखने नहीं देती है।माया भी देखती है कि हमारा ग्राहक जाता है तो एकदम नाक से, कान से पकड़ लेती है।फिर जब धोखा खाते हैं तो समझते हैं माया से धोखा खाया है।मायाजीत ही जगतजीत बन सकेंगे।उंच पद पा सकेंगे।मेहनत ही सारी इसमें है।श्रीमत कहती है मामएकम् याद करो तो तुम्हारी जो पतित बुद्धि है वो पावन श्रेष्ठ बन जावेगी।बड़ा मुश्किल चलते हैं।इसमें सब्जेक्ट एक ही है–अल्फ और बे।दो अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं।बाबा कहते अल्फ को याद करो फिर भी अपनी देह को, दूसरे की देह को याद करते रहते हैं।बाप कहते हैं देह को देखते हुये भी याद तुम मुझे करो।आत्मा को अभी तीसरा नेत्र मिला है मुझे देखने ,समझने का।उससे काम लो।त्रिनेत्री बने हो तो त्रिकालदर्शी भी बनते हो।नालेज धारण करना कोई मुश्किल नहीं है।बहुत ही अच्छे2 समझाते हैं ;परंतु योग बिल्कुल कम है।देहीअभिमानीपन बहुत कम है।थोड़ी बात में क्रोध, गुस्सा आ जाता है।गिरते ही रहते हैं।उठते हैं ,फिर गिरते हैं।आज उठे फिर गिर पड़ते हैं।देहअभिमान ही मुख्य है।फिर और विकार लोभ, मोह आदि में भी फंस पड़ते हैं।देह में भी मोह (होता) है ना।माताओं में मोह जास्ती होता है।अब बाप इनसे छुड़ाते हैं।तुमको बेहद का बाप मिला है।तो बंदरों से मोह क्यों रखते हो?इस समय शक्ल, बातचीत ही बंदरों मिसल हो जाती है।बाप कहते हैं नष्टोमोहा बन जाओ।निरंतर मुझे याद करो।पापों का बोझा सिर पर बहुत है।वो कैसे उतरे?परंतु माया ऐसी है याद करने नहीं देगी।....कितना भी माथा मारो।घड़ी2 बुद्धि को फिराय देती है।कितनी कोशिश करते हैं हम मोस्ट बिलवेड बाबा की महिमा करते रहते हैं।बस बाबा अभी आपके पास आये कि आये।चलते–फिरते याद भूल जाती है।और2 तरफ बुद्धि चली जाती है।यह नम्बरवन में जाने वाला भी तो पुरुषार्थी है ना।बच्चों की बुद्धि में यह याद रहना चाहिए कि हम गॉडली स्टुडेंट हैं।गीत में भी है भगवानोवाच्य तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ।सिर्फ शिव के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है।वास्तव में शिवबाबा की जयंती तो सारी दुनियां को मनानी चाहिए।शिवबाबा जो सबको दुःख से लिबरेट कर गाइड बन ले जाते हैं।यह तो सब मानते हैं कि वो लिबरेटर गाइड है।वो सबका पतित–पावन बाप है।सबको शांतिधाम–सुखधाम में ले जाने वाला है।

उनकी जयंती क्यों नहीं मनाते हैं सारी दुनिया?भारतवासी ही नहीं जानते हैं इसलिए ही भारत की यह बुरी गति हुई है।बुरी गति से ही मौत होना है।वो तो बॉम्ब्स ऐसे बनाते हैं गैस निकले और खलास।जैसे कि क्लोरोफारम लगाया जाता है ना।ऐसे2 बना रहे हैं।यह भी इनको बनाने ही हैं।बंद होने इम्पासिबुल है।जो2 कल्प पहले हुआ था सो अब रिपीट होगा।इन मूसलों और नैचुरल कैलेमिटीज से पुरानी दुनियां का विनाश हुआ था।जो अभी भी होगा।विनाश का समय जब होगा तो ड्रामाप्लान अनुसार एक्ट में आ ही जावेगा।ड्रामा विनाश जरूर करावेगा।नैचुरल कैलेमिटीज आदि सब होगी।रक्त की नदियां यहां बहेंगी।यह तो पुराने दुश्मन हैं।सिविल वार में एक दो को मार डालते हैं।सिविल वार का बुरा अंत होता है।आपस में कोई की बनती नहीं है।पार्लियामेंट में .....भी लगाते हैं, गाली भी देते रहते हैं।तुम्हारे में भी थोड़े जानते हैं कि यह दुनियां अब बदल रही है।अब हम जाते हैं सुखधाम।सदैव ज्ञान के अतिइन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।जितना याद में रहेगा उतना सुख बढ़ता जावेगा।छी2 से नष्टोमोहा होते जावेंगे।बाप सिर्फ कहते हैं अल्फ को याद करो तो बादशाही तुम्हारी है।सेकेंड में बादशाही।बादशाह को बच्चा हुआ तो गोया बादशाह बना ना।प्रिंस बन फिर महाराजा जरूर बनेगा।तो बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो और चक्र को याद करते रहो तो महाराजा बनेंगे।इसलिए गाया हुआ है सेकेंड में जीवनमुक्ति।सेकेंड में बेगर टू प्रिंस।कितना अच्छा है।तो श्रीमत पर अच्छी रीत चलना चाहिए ना।कदम2 पर राय लेनी होती है।ट्रस्टी बनना है।यह खुद ही ट्रस्टी बनते हैं।बच्चों को भी ट्रस्टी बनाते हैं।यह कुछ भी लेते हैं क्या?कहते हैं तुम ट्रस्टी हो सम्भालो।यह तो बड़ा बाबा हो गये ना।तो इनकी माननी पड़े।ट्रस्टी बने तो ममत्व टूट जाता है।कहते भी हैं ईश्वर का ही सब कुछ दिया हुआ है।फिर कुछ नुकसान पड़ता है या कोई मर जाते हैं तो बीमार हो पड़ते हैं।मिलता है तो खुशी होती हे।जबकि उनका ही दिया हुआ है तो दुःख क्यों होता है?जबकि कहते हो ईश्वर का दिया हुआ है।तो फिर मर जाता है तो फिर रोने की क्या दरकार है ;परंतु माया कम नहीं है।इस समय बाप कहते हैं तुमने हमको बुलाया है कि इस पतित दुनियां में नहीं हम रहना चाहते हैं।हमको पावन दुनियां में ले चलो।चाहे मार डालो, इस शरीर से ले लो।इनका अर्थ भी समझते नहीं हैं।पतित–पावन आवेंगे तो जरूर शरीर भी खतम होवेंगे ना।तब तो आत्माओं को ले जावेंगे।बाप आते ही हैं नई दुनियां की स्थापना ,पुरानी दुनियां का विनाश कराने।तो ऐसे बाप के साथ प्रीतबुद्धि होना चाहिए ना।एक से लव रहना चाहिए।उनको ही याद करना चाहिए।माया के तूफान तो आवेंगे।कर्मइन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना है।वो बेकायदे हो जाते हैं।बाप कहते हैं मैं आकर इस शरीर का आधार लेता हूँ।यह उनका शरीर है ना।तुमको याद बाप को करना है।इसलिए बच्चे गोद में आते हैं तो पूछता हूँ–किसको भाकी पहनते हो?अगर शिवबाबा को याद ना करते हो तो पाप लग जावेगा।हमेशा समझो हम शिवबाबा से मिलते हैं इस दादा द्वारा।पहले बाप याद आना चाहिए।शिवबाबा मिलता ही ब्रह्मा द्वारा है।और कोई द्वारा कभी मिल नहीं सकते हैं।ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं।ब्रह्मा भी बाबा शिव भी बाबा।विष्णु और शंकर को बाबा नहीं कहेंगे ना।शिव है निराकारी बाप।प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप।अभी तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो।दादा इनमें प्रवेश करते हैं।दादा का वर्सा बाबा द्वारा हम लेते हैं।दादा है निराकार।बाबा है साकार।यह वंडरफुल नई बातें हैं ना।त्रिमूर्ति दिखाते हैं ;परंतु समझते कुछ भी नहीं हैं।शिव को उड़ा दिया है।ब्रह्मा द्वारा स्थापना .....की?कितनी अच्छी2 बातें समझाई जाती हैं।खुशी रहनी चाहिए हम स्टूडेंट हैं।बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी ,सतगुरू भी है।हम आत्माओं को पावन बनाते हैं।नालेज भी देते हैं।.....नालेज इज सर्विस ऑफ इनकम कहा जाता है।